वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:5 अंक: 283 गुरुवार 12 मार्च 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

विधानसभा अध्यक्ष ने ली कलेक्ट्रेट में बैठक

चेटीचण्ड, रामनवमी और महावीर जयंती हमारे महत्वपूर्ण पर्व, सभी विभाग समन्वय से करें काम: देवनानी

विभागों को दिए 16 मार्च तक सभी तैयारियां पूरी करने के निर्देश

जिला कलेक्टर ने कहा, समन्वय से काम करें अधिकारी

अजमेर, (कासं)। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि आगामी सप्ताह से शुरू होने वाले चेटीचण्ड, रामनवमी और महावीर जयंती के धार्मिक आयोजन हमारे प्रमुख पर्व हैं। इन अवसरों पर विभिन्न संस्थाओं की ओर से जुलूस निकाले जाएंगे तथा विभिन्न आयोजन भी होंगे। ऐसे में जिला प्रशासन, पुलिस और सभी संबंधित विभाग 16 मार्च तक अपनी तैयारियां पूरी करें। इसमें किसी तरह की लापरवाही नहीं की जाए। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने बुधवार को कलेक्ट्रेट सभागार में चेटीचण्ड, रामनवमी व महावीर जयंती पर्वों को लेकर तैयारियों की समीक्षा की। जिला कलेक्टर लोक बन्धु व पुलिस अधीक्षक वंदिता राणा सहित अधिकारी बैठक में उपस्थित रहे। जिला कलेक्टर लोक बन्धु ने प्रशासनिक व्यवस्थाओं एवं पुलिस अधीक्षक वंदिता राणा ने कानून एवं शांति व्यवस्था के संबंध में किए जा रहे कार्यों से अवगत कराया। आयोजन समितियों के पदाधिकारियों ने शोभायात्रा आयोजन के बारे में जानकारी दी। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि अजमेर धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक रूप से समृद्ध परम्पराओं को धारण किए हुए है। इन्हीं के अन्तर्गत आगामी चेटीचण्ड पर्व झूलेलाल जयंती, रामनवमी पर्व एवं महावीर जयंती पर विशाल शोभायात्राएं एवं जुलूस कार्यक्रम आयोजित होंगे। इनकी प्रशासनिक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के लिए समस्त विभाग अपने दायित्व 16 मार्च तक पूर्ण करें। उनकी समीक्षा 17 मार्च को मौके पर की जाएगी। बैठक में आयोजकों एवं प्रशासनिक अधिकारियों के साथ विस्तार से चर्चा कर रूट निर्धारित किए गए। बैठक में देवनानी ने कहा कि प्रशासन द्वारा जन भावनाओं को ध्यान में रखते हुए बेहतर व्यवस्थाएं की जाएं। असामाजिक एवं आपराधिक तत्वों पर अंकुश लगाने के लिए मुस्तैदी के साथ कार्य किया जाए। इस दौरान यातायात व्यवस्था सुचारू रखी जाए ताकि राहगीरों को किसी प्रकार की समस्या न हो। पूर्व की तुलना में इस बार अधिक पुलिस बल तैनात रहेगा। शोभायात्रा के आगे, पीछे तथा साथ-साथ पुलिस जवानों की टुकडिय़ां चलती रहेंगी और मार्ग में आने वाले ऊंचे भवनों पर भी पुलिस जाप्ता तैनात रहेगा। उन्होंने जलदाय विभाग को निर्देशित किया कि यात्रा मार्ग में सभी लिकेज ठीक किए जाएं। जिला स्तरीय अधिकारी पेयजल सप्लाई के दौरान क्षेत्र भ्रमण करें, लीकेज का चिह्नीकरण कर उन्हें ठीक कराएं। जुलूस से पहले पेयजल सप्लाई देना सुनिश्चित करें। शाम के समय होने वाली सप्लाई एक दिन पहले दी जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि जनरेटर ढके हुए होने चाहिए। मुखौटा पहनकर शोभायात्रा में आने वालों के मुखौटे हटाकर पहचान के बाद ही उचित कार्रवाई की जाए। यातायात व्यवस्था सुचारू रखने के लिए कार्य योजना बनाई जाए। आयोजक अनुशासन एवं आपसी समन्वय के साथ कार्यक्रम सम्पन्न करें।

ये रहेंगे शोभायात्राओं के रूट

पूज्य लाल साहिब मन्दिर सेवा ट्रस्ट, देहली गेट के जय किशन पारवानी ने बताया कि चेटीचण्ड महोत्सव की विशाल धार्मिक एवं पारम्परिक शोभायात्रा पूज्य लाल साहिब मंदिर, झूलेलाल धाम, देहली गेट से प्रारम्भ होकर शहर के विभिन्न मार्गों से होते हुए रात्रि लगभग 10 बजे गंज गुरुद्वारे पर सम्पन्न होगी। शोभायात्रा का मार्ग झूलेलाल धाम देहली गेट से गंज, फव्वारा चौराहा, टेलीफोन एक्सचेंज, आगरा गेट, नया बाजार, चूड़ी बाजार, जीपीओ, स्टेशन रोड, पान दरीबा, पड़ाव, संत कंवर राम धर्मशाला, केसरगंज गोल चक्कर, रावण की बगीची, त्रिलोक नगर, आशा गंज, राजेन्द्र स्कूल, गुरुनानक कॉलोनी, हालाणी दरबार, हेमु कालानी चौक, प्लाजा सिनेमा, गिदवानी मार्केट, कवंडसपुरा, मदार गेट, नला बाजार, दरगाह बाजार, धानमंडी, देहली गेट होते हुए गंज गुरुद्वारे तक रहेगा। बैठक में जिला कलेक्टर लोक बन्धु ने अधिकारियों को सौंपे गए दायित्व एक सप्ताह में पूर्ण करने के निर्देश दिए। सभी कार्यों की मौके पर समीक्षा के लिए 17 मार्च को अधिकारियों एवं आयोजकों के साथ फील्ड विजिट की जाएगी।

सफाई, पेचवर्क जैसे कार्य करें निर्धारित समय में

उन्होंने नगर निगम के अधिकारियों को यात्रा मार्ग में सफाई, पेचवर्क, फेरो कवर तथा स्वच्छंद विचरण करने वाले पशुओं के संबंध में कार्य करने के निर्देश दिए। आयोजन से पूर्व देहली गेट, शिवाजी पार्क, जैन नमकीन एवं मदार गेट से नया बाजार तथा मदार गेट से पड़ाव की सडकों को प्राथमिकता के साथ ठीक किया जाए। यात्रा मार्ग से अस्थायी अतिक्रमण हटाने के लिए लगातार कार्रवाई की जाए। यात्रा के साथ तीन एम्बुलेंस लगातार चलेंगी। यात्रा मार्ग के आसपास के चिकित्सा संस्थान खुले रहने चाहिए। मिलावट के विरुद्ध भी लगातार कार्रवाई की जाए। दुकानदारों को शुद्ध सामग्री बेचने के लिए पाबंद किया जाए। गर्मी को देखते हुए प्रसाद, भोज्य एवं पेय पदार्थ ताजे ही उपयोग में लिए जाएं। जेएलएन चिकित्सालय में भी 10 पलंग आपातकालीन व्यवस्था के लिए आरक्षित रखे जाएं।

यात्रा मार्ग में नहीं रहें झूलते एवं ढीले तार

देवनानी ने यात्रा मार्ग में बिजली एवं केबल के ढीले तथा झूलते तारों को 21 फीट से ऊपर करने के निर्देश दिए। टाटा पावर तथा आयोजन समिति के प्रतिनिधि संयुक्त रूप से यात्रा मार्ग का अवलोकन करेंगे। इन तारों को स्थायी रूप से ऊंचा किया जाए। नला बाजार एवं ठठेरा बाजार में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि इन आयोजनों के समय विद्युत की पर्याप्त निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित की जाए। अजमेर विकास प्राधिकरण एवं सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिकारियों को अपने क्षेत्राधिकार की सडकों को दुरुस्त करने के निर्देश दिए गए। जाटियावास के पास टेलीफोन के खंभे हटाने के भी निर्देश दिए गए।

भट्टारक जी की नसियां में गूंजेगा भक्तामर स्तोत्र

2352 दीपकों से होगी भगवान आदिनाथ की 'आदि अर्चना'

जयपुर. शाबाश इंडिया

राजस्थान जैन सभा के तत्वावधान में प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ का जन्म कल्याणक महोत्सव गुरुवार, 12 मार्च को अत्यंत भक्तिभाव और भव्यता के साथ मनाया जाएगा। इस अवसर पर 'आदि अर्चना' कार्यक्रम के तहत भट्टारक जी की नसियां में दीप महाअर्चना अनुष्ठान का विशेष आयोजन होगा।

2352 दीपकों से प्रज्वलित होगा भक्ति का आंगन

राजस्थान जैन सभा के उपाध्यक्ष विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि गुरुवार सायंकाल अध्यक्ष सुभाष चन्द जैन एवं महामंत्री मनीष बैद के नेतृत्व में 48 मंडलीय भक्तामर स्तोत्र दीप महाअर्चना अनुष्ठान संपन्न होगा। इस आध्यात्मिक अनुष्ठान की मुख्य विशेषता 2352 दीपकों से होने वाली महाअर्चना होगी, जो पूरे परिसर को दिव्य आभा से सराबोर कर देगी।

समाज के प्रबुद्धजन होंगे सहभागी

मुख्य संयोजक सुभाष कुमार बज के अनुसार, इस अनुष्ठान के मुख्य मंडल पर समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तित्व कपूर चन्द महावीर कसेरा शास्त्र विराजमान करेंगे। वहीं, सुनील आदित्य पहाड़ियां मुख्य मंडल पर दीप प्रज्वलन करेंगे, जबकि अशोक टकसाली विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। भक्ति संध्या में संगीतकार नरेन्द्र जैन एंड पार्टी, अशोक गंगवाल एवं सुभाष बज अपनी सुमधुर प्रस्तुतियों से धर्म प्रभावना करेंगे।

48 कॉलोनियों के हजारों श्रद्धालु जुटेंगे

इस वृहद आयोजन में जयपुर की 48 विभिन्न जैन बाहुल्य कॉलोनियों से हजारों की संख्या में श्रद्धालु शामिल होकर पुण्य लाभ अर्जित करेंगे।

भव्य पोस्टर का हुआ विमोचन

इस धार्मिक समागम के प्रचार-प्रसार हेतु प्रसिद्ध समाजसेवी सुरेश सबलावत ने भट्टारक जी की नसिया में आयोजित एक सादे समारोह में कार्यक्रम के रंगीन पोस्टर का विमोचन किया। इस दौरान वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रदीप जैन, कोषाध्यक्ष अमर चन्द दीवान, कार्यकारिणी सदस्य भारतभूषण जैन, संयोजक महावीर सेठी, सुरेशचंद अजमेरा, अनिल बड़जात्या, शशि बज, सुरीला सेठी और निशा बड़जात्या सहित बड़ी संख्या में पदाधिकारी और धर्मप्रेमी उपस्थित रहे।

ऋषभदेव और भरत: 'भारत' की प्रामाणिक परंपरा

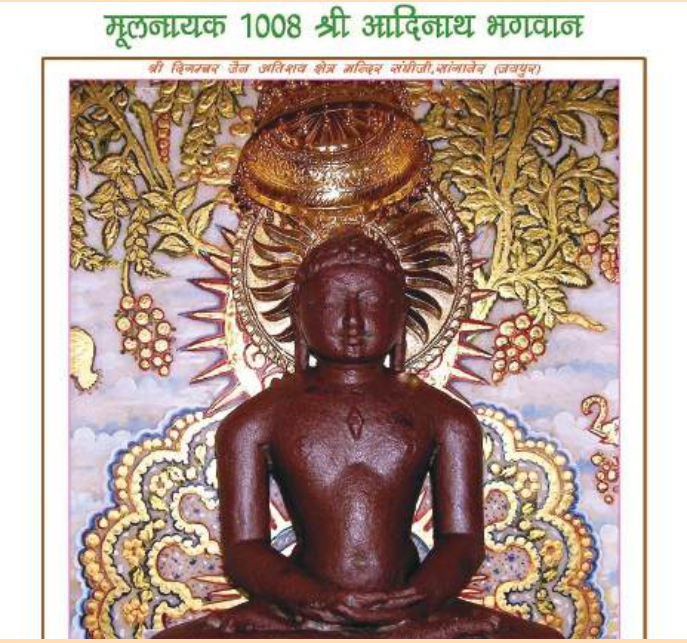

लेखक: डॉ. अखिल बंसल

भारतीय आध्यात्मिक चेतना में भगवान ऋषभदेव का स्थान आद्य प्रवर्तक के रूप में सर्वोपरि है। उन्होंने न केवल मोक्षमार्ग का उपदेश दिया, बल्कि सामाजिक संगठन, श्रम-विभाजन और सांस्कृतिक जीवन की सुदृढ़ आधारशिला भी रखी। जैन परंपरा के अनुसार, उनके ज्येष्ठ पुत्र भरत चक्रवर्ती सम्राट बने और उन्हीं के नाम पर इस विशाल भूभाग का नाम 'भारतवर्ष' विख्यात हुआ। इतिहास और परंपरा के तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि 'भरत' नाम की प्राचीनता निर्विवाद है। जैन साहित्य में इसे ऋषभदेव-पुत्र भरत से जोड़ने के प्रमाण अधिक सुस्पष्ट और निरंतर प्राप्त होते हैं। जैन आगमों, पुराणों और चरित्र-ग्रंथों में चक्रवर्ती भरत का विस्तृत वर्णन मिलता है—उनकी दिग्विजय, चक्ररत्न की प्राप्ति और अंततः वैराग्य धारण करने का प्रसंग आज भी प्रासंगिक है। ऐतिहासिक साक्ष्यों

की बात करें तो ओडिशा का 'हाथीगुम्फा शिलालेख', जिसे कलिंगराज खारवेल ने उत्कीर्ण कराया था, जैन परंपरा की प्रतिष्ठा का जीवंत प्रमाण है। इससे यह सिद्ध होता है कि ईसा पूर्व पहली शताब्दी तक आदिनाथ और उनकी गौरवशाली परंपरा की स्मृति हमारे राजनीतिक व सांस्कृतिक जीवन में गहराई से रची-बसी थी। यद्यपि वैदिक साहित्य, विशेषकर ऋग्वेद में 'भरत' जन का उल्लेख मिलता है, किंतु वहाँ 'भारत' नाम का भौगोलिक प्रयोग उतनी स्पष्टता से दृष्टिगोचर नहीं होता, जितना जैन परंपरा में 'भरत चक्रवर्ती' के माध्यम से प्राप्त होता है। अतः नामकरण की प्रत्यक्ष परंपरा को देखा जाए, तो ऋषभदेव-पुत्र भरत के साथ 'भारतवर्ष' की संगति अधिक तर्कसंगत और ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित प्रतीत होती है। जैन ग्रंथों में भरत को एक ऐसे चक्रवर्ती सम्राट के रूप में वर्णित किया गया है, जिनके शासनकाल में संपूर्ण आर्यावर्त एकीकृत हुआ। 'भारतवर्ष' शब्द उसी सार्वभौम सत्ता और धमार्धारित शासन की स्मृति का द्योतक है। यह केवल एक भौगोलिक पहचान नहीं, बल्कि धर्म, संयम और न्याय पर आधारित आदर्श राज्य-व्यवस्था का प्रतीक है। ऋषभदेव द्वारा प्रतिपादित अहिंसा और अपरिग्रह के सिद्धांत आज भी भारत की अस्मिता का आधार हैं। यदि 'भारत' नाम भरत चक्रवर्ती से जुड़ा है, तो इसका आध्यात्मिक मूल भी ऋषभदेव के संयम और धर्म में ही निहित है। इस दृष्टि से राष्ट्र की पहचान केवल एक ऐतिहासिक विमर्श नहीं, अपितु हमारा नैतिक दायित्व भी है। विभिन्न परंपराओं में 'भारतवर्ष' नाम की व्याख्या भले ही भिन्न रूपों में की गई हो, किंतु ऋषभदेव-पुत्र भरत के संदर्भ में इसके साक्ष्य जैन साहित्य और ऐतिहासिक संकेतों में अधिक सुसंगत मिलते हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम इस नाम के वास्तविक आध्यात्मिक आशय—अहिंसा, संयम और धमार्धारित जीवन—को समझें और इसे अपने राष्ट्रीय चरित्र का आधार बनाएँ। तभी 'भारत' अपने नाम के अनुरूप विश्व में एक श्रेष्ठ नैतिक आदर्श स्थापित कर सकेगा।

अपमान की सीमा और चरित्र का पतन

लेखक: नितिन जैन

समाज और जीवन के अनुभव हमें सिखाते हैं कि सहनशीलता एक महान गुण है, किंतु प्रत्येक गुण की अपनी एक मयार्दा होती है। यदि मनुष्य हर परिस्थिति में अपमान को निगलता रहे, अन्याय को सहता रहे और अपने आत्मसम्मान को बार-बार कुचलता रहे, तो यह सहनशीलता नहीं बल्कि उसके चरित्र के पतन की शुरूआत है। वास्तव में, अपमान को मूक सहमति देना चारित्रिक महानता नहीं, अपितु स्वाभिमान की अंतिम सीमा को लांघ जाना है। जब व्यक्ति का आत्मसम्मान मृतप्राय हो जाता है, तब उसके व्यक्तित्व की आंतरिक शक्ति भी समाप्त हो जाती है। संसार में वही व्यक्ति वास्तविक सम्मान का पात्र है, जो विनम्र होने के साथ-साथ अपने स्वाभिमान की रक्षा करना भी जानता है। विनम्रता का अर्थ कदापि यह नहीं है कि कोई भी हमें निरंतर अपमानित करता रहे और हम उसे धर्म, धैर्य या संस्कारों का आवरण ओढ़ाकर सहते रहें। यदि किसी व्यक्ति, संस्था या समाज में बार-बार अपमान सहने की प्रवृत्ति जड़ जमा लेती है, तो समाज उसे निर्बल समझने लगता है और यहीं से शोषण का चक्र प्रारंभ होता है। इतिहास साक्षी है कि जहाँ आत्मसम्मान जागृत रहा, वहाँ समाज उन्नति की ओर बढ़ा; और जहाँ लोगों ने अपमान को ही अपनी नियति मान लिया, वहाँ पतन निश्चित हुआ। अतः आवश्यक है कि मनुष्य अपने भीतर

एक आदर्श संतुलन बनाए रखे—जहाँ विनम्रता और धैर्य भी हो, किंतु आत्मसम्मान की लौ सदैव प्रज्वलित रहे। अपमान को हर बार स्वीकार कर लेना आदर्श नहीं हो सकता, क्योंकि यह आत्मा को भीतर से खोखला कर देता है। अपने स्वाभिमान की रक्षा करना 'अहंकार' नहीं, बल्कि एक स्वस्थ और जीवंत व्यक्तित्व की पहचान है। जो व्यक्ति स्वयं का सम्मान करना नहीं जानता, यह जगत भी उसे सम्मान की दृष्टि से नहीं देखता। जीवन में धैर्य और संयम अवश्य रखें, परन्तु इतना भी नहीं कि अपमान सहना आपके स्वभाव का हिस्सा बन जाए। जिस दिन मनुष्य अपमान को सहजता से स्वीकार करने लगता है, उसी क्षण से उसके चरित्र के पतन की अंतिम सीमा प्रारंभ हो जाती है।

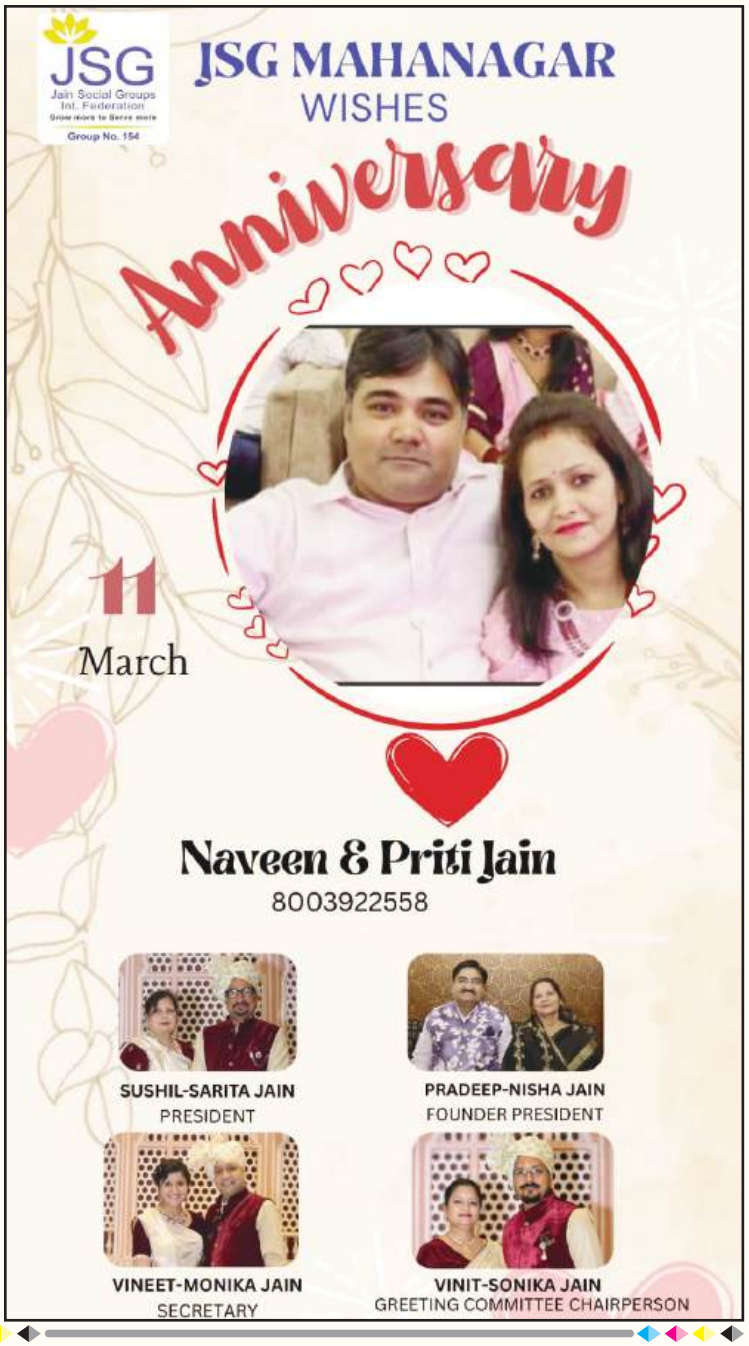

दुनिया

विश्व शांति की पुकार

ललित गर्ग

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद विश्व ने ऐसी व्यवस्था बनाने का प्रयास किया था जिसमें शक्ति को नियमों और संस्थाओं के माध्यम से नियंत्रित किया जा सके। लगभग आठ दशकों तक यह वैश्विक व्यवस्था अनेक उतार-चढ़ावों के बावजूद किसी-न-किसी रूप में कायम रही। अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं, बहुपक्षीय समझौते, कूटनीतिक संवाद और साझा नियम इन सबका उद्देश्य यही था कि दुनिया 'मत्स्य-न्याय', अर्थात् शक्तिशाली द्वारा कमजोर को निगल जाने की प्रवृत्ति से बची रहे। इसी सोच के तहत संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन, विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूनेस्को जैसे कई अंतर्राष्ट्रीय मंच अस्तित्व में आए। इन संस्थाओं ने विश्व राजनीति को पूरी तरह आदर्श नहीं बनाया, किंतु उन्होंने शक्ति के साथ नियम और नैतिकता का एक ढांचा अवश्य बनाए रखा। किन्तु आज यह व्यवस्था गंभीर संकट के दौर से गुजर रही है। विश्व राजनीति में एक नया रुझान उभर रहा है जिसमें सहयोग, संवाद और बहुपक्षीयता की जगह एकपक्षीय कार्रवाई, सैन्य शक्ति और तात्कालिक लाभ की मानसिकता को प्राथमिकता दी जा रही है। विशेष रूप से अमेरिका की हालिया नीतियों ने इस प्रवृत्ति को और तेज किया है। जो देश कभी नियम-आधारित वैश्विक व्यवस्था का प्रमुख समर्थक था, वही अब कई अंतर्राष्ट्रीय समझौतों और संस्थाओं से दूरी बनाता दिखाई देता है। पेरिस जलवायु समझौता, ईरान परमाणु समझौता और कुछ अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं से अलग होने के संकेतों ने यह संदेश दिया कि यदि किसी समझौते से तत्काल राष्ट्रीय हित प्रभावित हों तो उसे छोड़ देना स्वीकार्य है। इससे वैश्विक सहयोग की उस भावना को आघात पहुंचा जो दशकों से अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था की आधारशिला रही है। आज दुनिया के कई हिस्सों में युद्ध और संघर्ष सामान्य घटनाओं की तरह स्वीकार किए जाने लगे हैं। रूस-यूक्रेन युद्ध और गाजा संघर्ष इसके दुखद उदाहरण हैं। इन संघर्षों ने लाखों लोगों के जीवन को संकट में डाल दिया, शहरों को खंडहर में बदल दिया और वैश्विक अर्थव्यवस्था को अस्थिर कर दिया है। युद्ध की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि वह कभी स्थायी समाधान नहीं देता।

संपादकीय

समाज और प्रशासन के लिए एक चुनौती

भारत में बच्चों के लापता होने की बढ़ती घटनाएं आज एक भयावह सामाजिक चुनौती के रूप में उभरी हैं। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के ताजा आंकड़े रूह कंपा देने वाले हैं। रिपोर्ट के अनुसार, 1 जनवरी 2025 से 31 जनवरी 2026 के बीच देश में कुल 33,577 बच्चे लापता हुए। यह केवल एक संख्या नहीं, बल्कि हजारों परिवारों के उस असहनीय दर्द और अनिश्चितता की कहानी है, जिसका अंत कब होगा, कोई नहीं जानता। इनमें से 7,777 बच्चों का अब तक कोई सुराग नहीं मिल पाया है, जो हमारी सुरक्षा व्यवस्था पर बड़ा प्रश्नचिह्न लगाता है। आंकड़ों का विश्लेषण करें तो पश्चिम बंगाल की स्थिति सर्वाधिक चिंताजनक है, जहां सर्वाधिक 19,145 बच्चे लापता हुए। हालांकि इनमें से 15,465 बच्चों को खोज लिया गया, किंतु 3,680 बच्चे अब भी अपनी पहचान खोए हुए हैं। मध्य प्रदेश दूसरे स्थान पर है, जहां 4,256 बच्चे गायब हुए और 1,059 का पता नहीं चल सका। हरियाणा में भी 2,209 बच्चों के लापता होने और 353 का सुराग न मिलना व्यवस्था की विफलता को दर्शाता है। इसके विपरीत, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर और गुजरात जैसे राज्यों में लापता होने का कोई मामला दर्ज न होना सुखद संकेत है। यह सिद्ध करता है कि जहां सामाजिक सतर्कता और प्रशासनिक सक्रियता का मेल होता है, वहां ऐसी घटनाओं पर अंकुश संभव है। बच्चों के घर छोड़ने के पीछे कई कारण हैं।

पारिवारिक कलह या क्षणिक क्रोध में घर से निकलना एक पहलू है, लेकिन इसका दूसरा और काला पक्ष मानव तस्करी है। संगठित गिरोह सक्रिय हैं जो बच्चों को अगवा कर उन्हें भिक्षावृत्ति, बंधुआ मजदूरी या अनैतिक देह व्यापार के दलदल में धकेल देते हैं। हरियाणा और मध्य प्रदेश की हालिया घटनाएं जहां कहीं 14 वर्षीय किशोरी सहेली के घर जाने के बहाने निकली और कभी नहीं लौटी, तो कहीं साढ़े तीन साल की मासूम को बाजार से उचक्कों ने उठा लिया इस कड़वी सच्चाई को पुख्ता करती हैं। आजकल सामाजिक माध्यमों पर बच्चों को अगवा करने वाले गिरोहों के वीडियो अक्सर प्रसारित होते हैं। यद्यपि हर वीडियो सत्य नहीं होता, किंतु सीसीटीवी फुटेज में कैद होती घटनाएं इस खतरे की पुष्टि करती हैं। ये अपराधी बच्चों को एक राज्य से दूसरे राज्य ले जाकर बेच देते हैं। यह न केवल कानून का उल्लंघन है, बल्कि मानवता के विरुद्ध एक जघन्य अपराध भी है। इस विकराल समस्या से निपटने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है: प्रशासनिक मुस्तैदी: प्रत्येक जिले में एक विशेष कार्य बल (स्पेशल टास्क फोर्स) का गठन हो जो केवल लापता बच्चों के मामलों पर त्वरित कार्रवाई करे। रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड और बाजारों में सीसीटीवी का सघन जाल और निरंतर निगरानी अनिवार्य है। अंतर-राज्यीय समन्वय: चूंकि अपराधी अक्सर राज्य की सीमाएं लांघ जाते हैं, इसलिए विभिन्न राज्यों की पुलिस के बीच सूचनाओं का आदान-प्रदान और तालमेल बेहतर होना चाहिए।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

भारतीय रेल की स्वर्णिम गाथा

बिनोद कुमार सिंह

भारतीय रेल का इतिहास केवल पटरियों और इंजनों की कहानी नहीं है, बल्कि यह मानवीय साहस, तकनीकी कौशल और प्रकृति के साथ सामंजस्य का एक अद्भुत दस्तावेज है। दक्षिण भारत की नीलगिरि पर्वतमालाओं के बीच स्थित 'कुनूर' और वहां से गुजरने वाली ऐतिहासिक 'नीलगिरि माउंटेन रेलवे' (टॉय ट्रेन) इसी गौरवशाली विरासत का एक जीवंत अध्याय है। इस यात्रा का अनुभव करना मानो समय के किसी स्वप्निल गलियारे में प्रवेश करने जैसा है। नीलगिरि की पहाड़ियां अपनी हरित श्रृंखलाओं, धुंध भरी घाटियों और चाय के बागानों के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं। इन्हीं पहाड़ियों के मध्य स्थित कुनूर रेलवे स्टेशन किसी ऐतिहासिक धरोहर से कम नहीं दिखता। समुद्र तल से लगभग 1850 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह स्टेशन ब्रिटिश कालीन स्थापत्य शैली का अनुपम उदाहरण है। पत्थर और लकड़ी से बनी इसकी संरचना, पारंपरिक संकेतक और शांत वातावरण यात्रियों को औपनिवेशिक काल की याद दिलाते हैं। यहां पहुंचते ही ऐसा प्रतीत होता है मानो समय की गति कुछ क्षणों के लिए ठहर गई हो।

रोमांचक सफर का अनुभव

कुनूर से टॉय ट्रेन की यात्रा किसी जादू से कम नहीं है। लगभग 46 किलोमीटर के सफर में यह ट्रेन अनगिनत सुरंगों, ऊंचे पुलों और घुमावदार मोड़ों से होकर गुजरती है। खिड़की से बाहर झांकते ही चाय के बागानों का हरा कालीन और बादलों के बीच से झांकती घाटियाँ मन मोह लेती हैं। भाप के इंजन की सीटी जब पहाड़ों में गूँजती है, तो रोमांच अपनी चरम सीमा पर होता है। कहीं बंदरों के झुंड स्वागत करते हैं, तो कहीं झरनों का संगीत कानों में मिश्री घोलता है। यह रेलमार्ग केवल पर्यटन का साधन नहीं, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था और विकास की रीढ़ भी है। यहां का चाय उद्योग और पर्यटन इसी 'लाइफलाइन' पर टिका है।

इतिहास और निर्माण की चुनौतियां

इस रेलमार्ग की परिकल्पना 19वीं सदी में की गई थी, जब अंग्रेज अधिकारी नीलगिरि की शीतल जलवायु की ओर आकर्षित हो रहे थे। ऊटी (उधगमंडलम) को एक प्रमुख हिल स्टेशन के रूप में विकसित किया जा रहा था, लेकिन दुर्गम रास्तों के कारण वहां पहुंचना अत्यंत कठिन था। इस चुनौती को स्वीकार करते हुए मैदानी इलाके 'मेट्टुपालयम' से पहाड़ियों तक रेलमार्ग बिछाने का कार्य शुरू हुआ। तीखी ढलानें और घने जंगलों के बीच रेलमार्ग बनाना लगभग असंभव था, लेकिन इंजीनियरों और हजारों श्रमिकों के अथक परिश्रम से वर्ष 1908 में यह कार्य पूर्ण हुआ।

तकनीकी विशेषता: रैक एंड पिनियन

नीलगिरि टॉय ट्रेन की सबसे बड़ी विशेषता इसकी 'रैक एंड पिनियन' प्रणाली है। पहाड़ों की अत्यधिक खड़ी ढलान पर ट्रेन को सुरक्षित चढ़ाने के लिए पटरियों के बीच एक दांतेदार पटरी लगाई गई है। यही तकनीक इस मार्ग को दुनिया के अन्य रेलमार्गों से अलग बनाती है। इसकी इसी ऐतिहासिक और तकनीकी महत्ता को देखते हुए वर्ष 2005 में यूनेस्को ने इसे 'विश्व धरोहर' का दर्जा प्रदान किया।

अचरोल स्थित देशभूषण आश्रम में गणिनी आर्यिका सरस्वती मति माताजी का ससंघ प्रवास, उमड़ रहे श्रद्धालु

अचरोल/जयपुर. शाबाश इंडिया

आचार्य रत्न देशभूषण जी महामुनिराज की प्रखर शिष्य परंपरा के आचार्य श्री 108 महिमा सागर जी मुनिराज से दीक्षित गणिनी आर्यिका सरस्वती मति माताजी एवं आर्यिका अनन्त मति माताजी ससंघ इन दिनों अचरोल स्थित देशभूषण आश्रम में विराजित हैं। गत 7 मार्च से जारी इस प्रवास के दौरान प्रतिदिन विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रावक पहुँचकर संघ के दर्शन व आशीर्वाद प्राप्त कर रहे हैं।

आगम चर्चा और शंका समाधान

देशभूषण आश्रम के सचिव संतकुमार खण्डाका ने बताया कि प्रवास के दौरान आश्रम में आध्यात्मिक वातावरण बना हुआ है। श्रद्धालु न केवल माताजी के दर्शन कर रहे हैं, बल्कि आगम (शास्त्र) सम्मत अपनी विभिन्न जिज्ञासाओं पर चर्चा कर उनका समाधान भी प्राप्त कर रहे हैं। माताजी के सानिध्य में ज्ञान की अविरल धारा बह रही है।

दैनिक धार्मिक अनुष्ठान

आश्रम में प्रतिदिन प्रातः काल से ही मांगलिक क्रियाएँ प्रारंभ हो जाती हैं। जयपुर शहर और आस-पास के क्षेत्रों से आने वाले श्रावक भगवान के अभिषेक, शांतिधारा, जिनेंद्र पूजन, आहार चर्या और सामायिक आदि कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक सम्मिलित हो रहे हैं। भक्ति और वैराग्य के इस संगम से संपूर्ण क्षेत्र धर्ममय हो गया है।

दिल्ली की ओर होगा मंगल विहार

सचिव खण्डाका ने जानकारी दी कि आर्यिका संघ का दिल्ली की ओर मंगल विहार प्रस्तावित है। दिल्ली प्रस्थान से पूर्व संघ का प्रवास अचरोल स्थित इसी देशभूषण आश्रम में रहेगा। स्थानीय समाज और आश्रम प्रबंध समिति द्वारा संघ की वैयावृत्ति और व्यवस्थाओं हेतु विशेष प्रबंध किए गए हैं।

भगवान महावीर के 2625 वें जन्मोत्सव के अन्तर्गत आदिनाथ जयन्ती से महावीर जयन्ती तक

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन राजस्थान रीजन, जयपुर के तत्वावधान में

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप सन्मति जयपुर के सहयोग से

प्रायोजक ARL ARL Infratech Ltd.

प्रायोजक समाचार जगत

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप स्वास्तिक द्वारा

रक्तदान जीवन दान

रक्तदान शिविर एवं

समाज भूषण स्व. श्री राजेन्द्र के. गोधा जीवन रक्षक सम्मान 2026

शुक्रवार 13 मार्च 2026
प्रातः 9 से 2 बजे तक

स्थान : जयपुरिया हॉस्पिटल
मिलापनगर, टोंक रोड़, जयपुर

क्यों न खुद की एक पहचान बनाये। चलो रक्तदान करे और करवाये।।

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप स्वास्तिक
सतीश बाकलीवाल - अध्यक्ष
अजित बड़जात्या - सचिव
सरोज रानी अजमेरा - संयोजक

: आयोजन समिति :
मुख्य समन्वयक : राजेश-सीमा बड़जात्या
मुख्य समन्वयक : राकेश-समता गोदिका
:: समन्वयक ::
राकेश संघी, राकेश छाबड़ा
अनिल राँवका, नितेश पाण्ड्या

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप, फैडरेशन राज. रीजन
अध्यक्ष : सुनील-सुमन बज, सचिव : नीरज-रेखा जैन
कोषाध्यक्ष : प्रमोद-सोनल जैन
दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप, सन्मति
अध्यक्ष : राजेश-रानी पाटनी, सचिव : संजय-ज्योति छाबड़ा
कोषाध्यक्ष : कमल-मंजू ठोलिया

Vardhman Printers # 9314263204

15 मार्च को रविंद्र मंच पर होगा नाटक ''जामुन का पेड़''

जयपुर. शाबाश इंडिया

रंगशिल्प संस्था की ओर से रविंद्र मंच के संरक्षण और उसकी स्थिति पर ध्यान आकर्षित करने के उद्देश्य से व्यंग्य नाटक ''जामुन का पेड़'' का मंचन 15 मार्च को सायं 7 बजे रविंद्र मंच पर किया जाएगा। यह नाटक प्रशासनिक व्यवस्थाओं और उनके कार्यकलापों पर तीखा व्यंग्य प्रस्तुत करता है। संस्था का कहना है कि राज्य सरकार द्वारा रविंद्र मंच की लगातार अनदेखी और पर्याप्त बजट के अभाव में भवन की स्थिति जर्जर होती जा रही है। इससे यह संकेत मिलता है कि कला और संस्कृति के संरक्षण को लेकर अपेक्षित गंभीरता नहीं दिखाई जा रही है। रविंद्र मंच की बदहाल स्थिति के कारण यहां सांस्कृतिक गतिविधियां भी पहले की तुलना में कम हो गई हैं और दर्शकों की संख्या में भी गिरावट आई है। इस नाटक के माध्यम से रंगकर्मी सरकार को यह याद दिलाना चाहते हैं कि रविंद्र मंच केवल एक भवन नहीं, बल्कि प्रदेश की महत्वपूर्ण सांस्कृतिक पहचान है। रंगकर्मियों और विभिन्न सांस्कृतिक संस्थाओं ने समय-समय पर सरकार से रविंद्र मंच के रखरखाव और विकास के लिए पर्याप्त बजट उपलब्ध कराने की मांग भी की है। रंगशिल्प संस्था का मानना है कि इस नाटक के माध्यम से सरकार और समाज दोनों का ध्यान रविंद्र मंच की ओर आकर्षित होगा तथा इसके संरक्षण और विकास की दिशा में ठोस कदम उठाए जा सकेंगे।

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप सीकर का 'चालो देखण न...' होली स्नेह मिलनः लाडनूं में बिखरे फाग के रंग

सीकर. शाबाश इंडिया

12 मार्च दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप, सीकर द्वारा होली के पावन पर्व पर आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम ''चालो देखण न...'' हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस अनूठे आउटडोर कार्यक्रम में समूह के सभी सदस्यों ने सपरिवार सम्मिलित होकर फाग की मस्ती और धार्मिक पर्यटन का आनंद लिया। ग्रुप के अध्यक्ष नवीन कासलीवाल एवं मंत्री प्रदीप लालास ने बताया कि यात्रा का शुभारंभ कुमकुम तिलक लगाकर आत्मीय स्वागत के साथ हुआ। बस के सफर के दौरान सदस्यों ने नाचते-गाते और भजनों की प्रस्तुति देते हुए यात्रा का भरपूर आनंद लिया। यह कारवां ऐतिहासिक नगरी लाडनूं पहुँचा, जहाँ सभी श्रद्धालुओं ने विश्वप्रसिद्ध श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर के दर्शन कर पुण्य लाभ अर्जित किया। धार्मिक दर्शन के पश्चात सभी सदस्य मोदी रिसॉर्ट पहुँचे, जहाँ रिसॉर्ट प्रबंधन द्वारा वेलकम ड्रिंक और अल्पाहार (स्नैक्स) के साथ भव्य स्वागत किया गया। होली की मस्ती को दोगुना करने के लिए रिसॉर्ट में कई मनोरंजक गतिविधियों का आयोजन हुआ।

रेन डांस और स्विमिंग का लिया आनंद

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण 'सरप्राइजिंग स्विमिंग' और 'रेन डांस' रहा, जहाँ सदस्यों ने डीजे की मधुर धुनों और होली के पारंपरिक गीतों (धमाल) पर जमकर नृत्य किया। विभिन्न प्रकार के मजेदार गेम्स और सामूहिक गतिविधियों ने सभी का मन मोह लिया। फागण की मस्ती और आपसी स्नेह के साथ इस शानदार आयोजन का समापन हुआ।

भगवान महावीर के 2625 वें जन्मोत्सव के अन्तर्गत आदिनाथ जयन्ती से महावीर जयन्ती तक

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन राजस्थान रीजन, जयपुर के तत्वावधान में

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप सन्मति जयपुर के सहयोग से

प्रायोजक ARL

प्रायोजक समाचार जगत

KM TRANS LOGISTICS द्वारा

रक्तदान जीवन दान

रक्तदान शिविर एवं

समाज भूषण स्व. श्री राजेन्द्र के. गोधा जीवन रक्षक सम्मान 2026

गुरुवार 12 मार्च 2025

प्रातः 9.30 से 3 बजे तक

Venue : KM TRANS LOGISTICS

1281/1285, Near Pushpraj Petrol Pump, Bhankrota, Jaipur-Ajmer Express Way

क्यों न खुद की एक पहचान बनाये। चलो रक्तदान करे और करवाये।।

Coordinator:
DINESH SHARMA
(9414956111)
HR Jaipur Off.: 9929721821

: आयोजन समिति :
मुख्य समन्वयक : राजेश-सीमा बड़जात्या
मुख्य समन्वयक : राकेश-समता गोदिका
:: समन्वयक ::
राकेश संघी, राकेश छाबड़ा
अनिल राँवका, नितेश पाण्ड्या

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप, फेडरेशन राज. रीजन
अध्यक्ष : सुनील-सुमन बज, सचिव : नीरज-रेखा जैन
कोषाध्यक्ष : प्रमोद-सोनल जैन
दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप, सन्मति
अध्यक्ष : राजेश-रानी पाटनी, सचिव : संजय-ज्योति छाबड़ा
कोषाध्यक्ष : कमल-मंजू ठोलिया

Vardhman Printers # 9314263204

टोंक में आदिनाथ जयंती की धूम: बैंड-बाजे और लवाजमे के साथ आज निकलेगी भव्य शोभायात्रा

टोंक. शाबाश इंडिया

जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर, देवाधिदेव 1008 भगवान आदिनाथ का जन्म कल्याणक महोत्सव गुरुवार को श्री आदिनाथ दिगंबर जैन नसियां में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। यह समस्त मांगलिक आयोजन आचार्य इन्द्र नंदी जी महाराज, बालाचार्य निपूर्ण नंदी जी महाराज एवं गणिनी आर्यिका 105 स्वस्ति भूषण माताजी के पावन सानिध्य में संपन्न होंगे।

भक्तिमय आयोजनों का सिलसिला जारी

इससे पूर्व बुधवार को गणिनी आर्यिका स्वस्ति भूषण माताजी के सानिध्य में भव्य 'आनंद यात्रा' निकाली गई। इसके पश्चात माता-पिता की 'गोद भराई' का भावपूर्ण कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें महिला मंडल ने सुमधुर भजनों और विनतियों की प्रस्तुति दी। बुधवार प्रातः मानस्तंभ पर पंचामृत अभिषेक किया गया, जिसके बाद तीनों पूज्य संतों के मंगल प्रवचन हुए। दोपहर में महिलाओं के लिए संगीत प्रतियोगिता और शाम को नाटिका व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

आज का आकर्षण: हाथी-घोड़ों के साथ राजसी शोभायात्रा

समाज प्रवक्ता पवन कंटान एवं विकास जागीरदार ने बताया कि गुरुवार (आज) आदिनाथ जयंती के मुख्य अवसर पर प्रातःकाल श्रीजी को स्वर्णमयी रथ में विराजित कर भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी। यह शोभायात्रा जैन नसियां से रवाना होकर शहर के प्रमुख मार्गों—बड़ा कुआं, काफला बाजार और घंटाघर—से होते हुए पुनः नसियां पहुंचेगी। शोभायात्रा में गजराज (हाथी), अश्व (घोड़े) और श्रीजी का वैभवशाली रथ आकर्षण का केंद्र रहेंगे। साथ ही नैनवां एवं निंबाहेड़ा के प्रसिद्ध बैंडों की मधुर स्वर लहरियां वातावरण

को धर्ममय बनाएंगी। शोभायात्रा के उपरांत श्रीजी का पंचामृत अभिषेक एवं केसर-दूध से शांतिधारा की जाएगी। दिन में 'आदिनाथ महामंडल विधान' का सामूहिक अनुष्ठान होगा। वहीं, सायंकाल 1008 दीपकों से महाआरती, प्रवचन, स्वाध्याय, शास्त्र सभा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की कड़ी के साथ महोत्सव का समापन होगा।

श्रद्धालुओं की भारी उपस्थिति

आयोजन की व्यवस्थाओं में पदमचंद आडरा, महावीर प्रसाद देवली, नरेंद्र फागी, धर्मचंद पत्तल-दोना, विकास जागीरदार, विकास अग्रवाल, ओम ककोड़, कमल सर्राफ, मुकेश बरवास, नीटू छामुनिया, रिंकू बोरदा, मनीष फागी, जितेंद्र बनेठा, पप्पू नमक, बाबूलाल रानोली सहित बड़ी संख्या में समाज के प्रबुद्धजन और श्रद्धालु सक्रिय रूप से जुटे हुए हैं।

भगवान महावीर के 2625 वें जन्मोत्सव के अन्तर्गत आदिनाथ जयन्ती से महावीर जयन्ती तक

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन राजस्थान रीजन, जयपुर के तत्वावधान में

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप सन्मति जयपुर के सहयोग से

प्रायोजक ARL

प्रायोजक समाचार जगत

KM TRANS LOGISTICS द्वारा

रक्तदान जीवन दान

रक्तदान शिविर एवं

समाज भूषण स्व. श्री राजेन्द्र के. गोधा जीवन रक्षक सम्मान 2026

गुरुवार 12 मार्च 2025
प्रात: 9.30 से 3 बजे तक

Venue : KM TRANS LOGISTICS
Gidani, Maujmabad, Jaipur-Ajmer Express Way

क्यों न खुद की एक पहचान बनाये। चलो रक्तदान करे और करवाये।।

Coordinator:
ROHIT SHARMA
(9116122963)
HR Jaipur Off.: 9929721821

: आयोजन समिति :
मुख्य समन्वयक : राजेश-सीमा बड़जात्या
मुख्य समन्वयक : राकेश-समता गोदिका
:: समन्वयक ::
राकेश संघी, राकेश छाबड़ा
अनिल राँवका, नितेश पाण्ड्या

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप, फैडरेशन राज. रीजन
अध्यक्ष : सुनील-सुमन बज, सचिव : नीरज-रेखा जैन
कोषाध्यक्ष : प्रमोद-सोनल जैन
दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप, सन्मति
अध्यक्ष : राजेश-रानी पाटनी, सचिव : संजय-ज्योति छाबड़ा
कोषाध्यक्ष : कमल-मंजू ठोलिया

Vardhman Printers # 9314263204

अनिल पारसदास जैन बने अखिल भारतीय दिगम्बर जैन परिषद के नए राष्ट्रीय अध्यक्ष

सोनागिरि. शाबाश इंडिया

अ. भा. दिगम्बर जैन परिषद के पदाधिकारी मण्डल की उच्चस्तरीय बैठक में श्री अनिल पारसदास जैन को सर्वसम्मति से संगठन का नया राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनीत किया गया है। लगभग सभी प्रदेश अध्यक्षों द्वारा प्रस्तावित उनके नाम पर केंद्रीय पदाधिकारी मण्डल ने गहन चर्चा के उपरांत अपनी अंतिम मुहर लगा दी। संगठन के निवर्तमान अध्यक्ष श्री चक्रेश जैन अस्वस्थता के कारण इस बैठक में उपस्थित नहीं हो सके, अतः वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री डी. आर. जैन की अध्यक्षता में बैठक की कार्यवाही संपन्न हुई। 110 वर्ष पुराने इस गौरवशाली संगठन, जिसकी स्थापना ब्र. शीतलप्रसाद जी ने की थी, की बैठक का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ। इसके पश्चात पूर्व बैठक की कार्यवाही पढ़कर सुनाई गई, जिसका उपस्थित सदस्यों ने करतल ध्वनि से अनुमोदन किया।

उज्जैन में होगा आगामी राष्ट्रीय अधिवेशन

बैठक के दौरान आगामी राष्ट्रीय अधिवेशन की तिथि और स्थान पर भी विचार-विमर्श किया गया। सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि परिषद का आगामी अधिवेशन 9 व 10 मई को उज्जैन में आयोजित किया जाएगा। संगठन के प्रति समर्पित सेवाओं के लिए श्री जीवनलाल जी एवं श्री चक्रेश जी को 'परिषद रत्न' से सम्मानित करने का महत्वपूर्ण निर्णय भी इस बैठक में लिया गया।

देशभर से जुटे पदाधिकारी

बैठक में दिल्ली से श्री अनिल जैन, डी. आर. जैन, नीरज जैन, पुनीत जैन, पीयूष जैन व सुनील जैन; गुरुग्राम से अशोक जैन; जयपुर से डा. अखिल बंसल; सागर से सुनील जैन, प्रशांत समैया व कमलेश जैन; इंदौर से निर्मला जैन व प्रभा जैन; दिल्ली से रेनू जैन व सरला जैन; ग्वालियर से शकुंतला जैन एवं डा. आदर्श जैन सहित अनेक पदाधिकारी सम्मिलित हुए। बैठक के अंत में आवास व भोजन की उत्तम व्यवस्था के लिए आचार्य कुंदकुंद परमागम मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशील सेठी का आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन संगठन के महामंत्री श्री अनिल जैन ने किया।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com | weeklyshabaas@gmail.com

फागी परिक्षेत्र में आदिनाथ जयंती की धूम

त्रिमूर्ति दिगंबर जैन मंदिर में उमड़ेगा आस्था का सैलाब

फागी. शाबाश इंडिया। फागी परिक्षेत्र सहित आस-पास के चकवाड़ा, चोरू, नारेड़ा, मंडावरा, मंडावरी, मैंदवास, लसाड़िया, निमेड़ा और लदाना सहित सभी कस्बों में जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ (ऋषभदेव) का जन्म कल्याणक महोत्सव 12 मार्च को हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। जैन महासभा के मीडिया प्रवक्ता राजाबाबू गोधा ने बताया कि कस्बे के 'श्री त्रिमूर्ति दिगंबर जैन मंदिर' में यह दो दिवसीय भव्य महोत्सव समाधिस्थ आर्यिका 105 श्री आदिमति माताजी के आशीर्वाद और आर्यिका 105 श्रुतमति माताजी एवं आर्यिका 105 सुबोधमति माताजी की मंगल प्रेरणा से आयोजित किया जा रहा है। उत्सव के प्रथम दिन, 11 मार्च की सायंकाल 108 दीपकों से भगवान की महाआरती की गई। तत्पश्चात रात्रि 8:00 बजे 'आदिमति महिला मंडल' द्वारा मंगलाचरण, भक्ति संध्या एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मनमोहक प्रस्तुतियां दी गईं। गोधा ने जानकारी दी कि 12 मार्च को महोत्सव के मुख्य दिन प्रातः 7:15 बजे जिनेंद्र अर्चना, पंचामृत अभिषेक एवं विश्व शांति की कामना के साथ 'महाशांतिधारा' का कार्यक्रम संपन्न होगा। प्रातः 8:00 बजे श्रीजी को पालना झुलाने का सौभाग्यशाली कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। दोपहर 12:15 बजे पंडित मनीष गोधा के निर्देशन में 'आदिनाथ महामंडल विधान' का सामूहिक अनुष्ठान होगा। इस विधान में नैनवां के प्रसिद्ध संगीतकार दुर्गेश एण्ड पार्टी अपनी सुमधुर स्वर लहरियों और साज-बाज के साथ भक्ति का रंग घोलेंगे। मंदिर समिति के पदम बजाज एवं कमलेश मंडावरा ने गुण सागर कॉलोनी, आदिमति महिला मंडल फागी सहित सभी सहयोगी संस्थाओं और सकल दिगंबर जैन समाज से अपील की है कि वे इस महोत्सव में अधिक से अधिक संख्या में सम्मिलित होकर धर्म लाभ प्राप्त करें। आयोजन की तैयारियों को लेकर समाज के युवाओं और महिला मंडलों में भारी उत्साह देखा जा रहा है।

प्रेषकः राजाबाबू गोधा मीडिया प्रवक्ता – जैन महासभा (राजस्थान)

गांधी स्मृति में गूंजा 'णमोकार महामंत्र'

सर्वधर्म प्रार्थना में पर्व और विहान ने किया जैनधर्म का प्रतिनिधित्व

नई दिल्ली. शाबाश इंडिया

गांधी स्मृति मार्ग स्थित कीर्ति मंडपम् में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में 'सर्वधर्म प्रार्थना एवं भजन संध्या' का भव्य आयोजन हुआ। 'गिल्ड फॉर सर्विस' एवं 'वार विडो एसोसिएशन' के तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में 'जिनधर्म रक्षक' संस्था के बाल सदस्यों, पर्व जैन और विहान जैन सेठिया ने जैनधर्म का गौरवपूर्ण प्रतिनिधित्व किया।

सांस्कृतिक वैभव और ओजस्वी प्रस्तुति

कार्यक्रम में पर्व जैन ने 'णमो जिणाणं-जय जिनेन्द्र' के उद्घोष के साथ सभी का अभिनंदन किया। उन्होंने गौरव के साथ उल्लेख किया कि हम उस भारत भूमि के निवासी हैं, जिसका नाम प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के पुत्र चक्रवर्ती सम्राट भरत के नाम पर पड़ा है। इसके पश्चात पर्व ने संस्कृत भाषा में रचित 'भक्तामर स्तोत्र' और जन-जन की मंगल भावना के प्रतीक 'मेरी भावना' का सस्वर वाचन किया। विश्व शांति की कामना के साथ पर्व एवं विहान ने प्राकृत भाषा में 'णमोकार महामंत्र' का पाठ कर उपस्थित जनसमूह को मंत्रमुग्ध कर दिया।

विशिष्ट अतिथियों ने किया सम्मानित

अल्पसंख्यक आयोग की विशेषज्ञ सलाहकार एवं आयोजन की जैन संयोजिका डॉ. इन्दु जैन 'राष्ट्र गौरव' ने बताया कि विशाल सभागार में जब नन्हें बालक जैन प्रार्थना कर रहे थे, तब पूरा वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से भर गया। इस अवसर पर भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की धर्मपत्नी श्रीमती गुरशरण कौर, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के उपाध्यक्ष श्री विजय गोयल, 'द गिल्ड फॉर सर्विस' की अध्यक्षा मीरा खन्ना और 'वार विडो एसोसिएशन' की अध्यक्षा दमयंती ताम्बे जैसे विशिष्ट अतिथियों ने दोनों बालकों की प्रस्तुति की सराहना करते हुए उन्हें आशीर्वाद दिया और सम्मानित किया। 'जिनधर्म रक्षक' की ओर से डॉ. इन्दु जैन ने भी बच्चों को पुरस्कृत किया।

सर्वधर्म सद्भाव की मिसाल

प्रार्थना सभा में जैन, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बहाई और पारसी धर्म के बाल प्रतिनिधियों ने अपनी-अपनी परंपराओं के अनुसार प्रार्थनाएँ प्रस्तुत कीं। अंत में प्रसिद्ध गायिका रानीता डे ने भजनों की शास्त्रीय प्रस्तुति से श्रोताओं को भावविभोर कर दिया।

जैन समाज में हर्ष की लहर

इग्नू के प्रोफेसर प्रवीण जैन व सुमन जैन के पुत्र पर्व जैन तथा समाजसेवी श्री सुखराज सेठिया के पौत्र एवं सुनील-सुरुचि सेठिया के पुत्र विहान सेठिया की इस उपलब्धि पर जैन समाज के गणमान्य व्यक्तियों ने हर्ष व्यक्त किया है। देव-शास्त्र-गुरु के प्रति समर्पित इन बालकों की इस विशेष उपलब्धि के लिए परिवारजनों को हार्दिक बधाई दी जा रही है।

भगवान महावीर के 2625 वें जन्मोत्सव के अन्तर्गत आदिनाथ जयन्ती से महावीर जयन्ती तक

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन राजस्थान रीजन, जयपुर के तत्वावधान में

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप सन्मति जयपुर के सहयोग से

प्रायोजक ARL ARL Infratech Ltd.

प्रायोजक समाचार जगत

राजवंश सीनियर सैकण्डरी स्कूल, बरकत नगर एवं
दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप सम्यक

द्वारा

रक्तदान जीवन दान

रक्तदान शिविर एवं

समाज भूषण स्व. श्री राजेन्द्र के. गोधा जीवन रक्षक सम्मान 2026

गुरुवार 12 मार्च 2026
प्रातः 9 से 12 बजे तक

स्थान : राजवंश पब्लिक सीनियर सैकण्डरी स्कूल
बरकत नगर, गली न. 8, टोंक फाटक

क्यों न खुद की एक पहचान बनाये। चलो रक्तदान करे और करवाये।।

राजवंश सीनियर सैकण्डरी स्कूल
निदेशक : श्रीमती सीता चौहान
सचिव : श्री अनिमेष चौहान
दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप सम्यक
अध्यक्ष : डॉ. इन्द्र कुमार जैन -स्नेहलता जैन
सचिव : नवल-सुनीता जैन
कोषाध्यक्ष : मुकेश-कल्पना शाह

: आयोजन समिति :
मुख्य समन्वयक : राजेश-सीमा बड़जात्या
मुख्य समन्वयक : राकेश-समता गोदिका
:: समन्वयक ::
राकेश संघी, राकेश छाबड़ा
अनिल रावंका, नितेश पाण्ड्या

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप, फेडरेशन राज. रीजन
अध्यक्ष : सुनील-सुमन बज, सचिव : नीरज-रेखा जैन
कोषाध्यक्ष : प्रमोद-सोनल जैन
दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप, सन्मति
अध्यक्ष : राजेश-रानी पाटनी, सचिव : संजय-ज्योति छाबड़ा
कोषाध्यक्ष : कमल-मंजू ठोलिया

Vardhman Printers # 9314263204

जयपुर में गूंजेगा आदिनाथ का जयकारा: 1008 वाहनों के साथ कल निकलेगी विशाल 'वाहन रथयात्रा'

राजधानी में दूसरी बार ऐतिहासिक आयोजन; 18 किलोमीटर लंबे मार्ग पर 19 तीर्थ क्षेत्रों की झांकियां होंगी मुख्य आकर्षण

जयपुर. शाबाश इंडिया

असि, मसि और कृषि की शिक्षा के माध्यम से विश्व को सभ्यता का पाठ पढ़ाने वाले जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ (ऋषभदेव) का जन्म कल्याणक महोत्सव गुरुवार, 12 मार्च को गुलाबी नगरी में अभूतपूर्व उत्साह के साथ मनाया जाएगा। राजस्थान जैन युवा महासभा के तत्वावधान में आयोजित इस महोत्सव का मुख्य आकर्षण एक विशाल 'वाहन रथयात्रा' होगी, जिसमें 1008 से अधिक दोपहिया और चौपहिया वाहनों पर सवार होकर जैन श्रद्धालु शामिल होंगे। युवा महासभा के प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप जैन एवं महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि इस रथयात्रा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें देश के विभिन्न 19 प्रमुख जैन तीर्थों (जैसे अयोध्या, कैलाश पर्वत, कुंडलपुर आदि) में स्थापित भगवान आदिनाथ की प्रतिमाओं के भव्य चित्र रथों पर प्रदर्शित किए जाएंगे। स्वर्ण एवं रजत जड़ित रथों के साथ 24 तीर्थंकरों के वैभवशाली रथ भी इस यात्रा की शोभा बढ़ाएंगे।

18 किलोमीटर का मार्ग और भव्य स्वागत

रथयात्रा का शुभारंभ प्रातः 7:00 बजे प्रताप नगर (हल्दीघाटी मार्ग, सेक्टर 5) स्थित श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर से होगा। यह यात्रा टोंक रोड, दुगार्पुरा, महावीर नगर, गोपालपुरा बाईपास, गुर्जर की थड़ी और मानसरोवर के मध्यम मार्ग से होते हुए अग्रवाल फार्म (मीरा मार्ग) स्थित श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर पहुँचेगी। 18 किलोमीटर लंबे इस मार्ग पर 51 दिगंबर जैन मंदिरों की समितियों द्वारा 19 प्रमुख स्थानों पर पुष्प वर्षा और महाआरती के माध्यम से भगवान का भव्य स्वागत किया जाएगा।

लवाजमा और सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

मुख्य समन्वयक राजीव जैन (गाजियाबाद) एवं परामर्शक विवेक काला के अनुसार, रथयात्रा में 'भरत का भारत' विषय पर विशेष झांकी, भजन मंडलियां, बैंड-बाजे, विंटेज कारें और डीजे शामिल होंगे। महिला मंडलों के लिए विशेष रूप से सजाई गई ट्रैक्टर-ट्रालियां आकर्षण का केंद्र रहेंगी। यात्रा मार्ग में श्रद्धालु जयकारों और प्रेरणादायक नारों वाली तख्तियां लेकर चलेंगे।

धर्मसभा और वात्सल्य भोज

यात्रा प्रातः 10:15 बजे मीरा मार्ग स्थित आदिनाथ भवन पहुँचकर विशाल धर्मसभा में परिवर्तित हो जाएगी। यहाँ दिगंबर संतों के सानिध्य में भगवान का कलशाभिषेक और महाआरती होगी। कार्यक्रम के अंत में सकल जैन समाज के लिए सामूहिक 'वात्सल्य भोज' का आयोजन किया गया है।

फ्लेक्स का विमोचन

आयोजन की पूर्व संध्या पर आयोजित बैठक में बहुरंगीय पोस्टर और फ्लेक्स का विमोचन किया गया। इस बैठक में प्रदीप जैन, राकेश गोधा, विनोद जैन कोटखावदा, संजय पाण्डया, कमल सरावगी, सुभाष बज सहित अनेक पदाधिकारी और विभिन्न जैन सोशल ग्रुप्स के सदस्य उपस्थित रहे। बैठक का संचालन विनोद जैन कोटखावदा ने 'णमोकार महामंत्र' के सामूहिक पाठ के साथ किया।

प्रेषक: विनोद जैन कोटखावदा

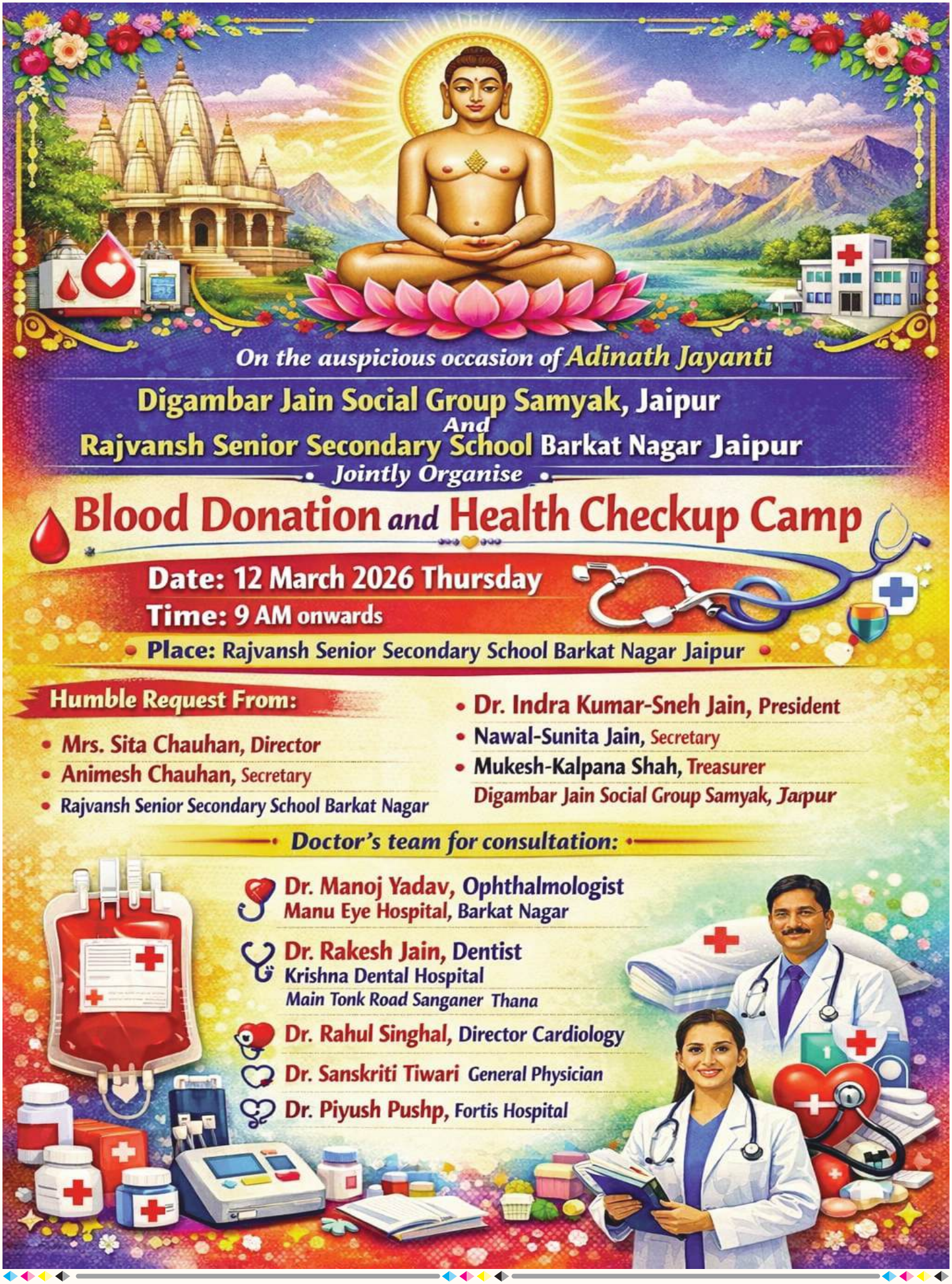
On the auspicious occasion of Adinath Jayanti
Digambar Jain Social Group Samyak, Jaipur
And
Rajvansh Senior Secondary School Barkat Nagar Jaipur
Jointly Organise
Blood Donation and Health Checkup Camp
Date: 12 March 2026 Thursday
Time: 9 AM onwards
Place: Rajvansh Senior Secondary School Barkat Nagar Jaipur
Humble Request From:
Mrs. Sita Chauhan, Director
Animesh Chauhan, Secretary
Rajvansh Senior Secondary School Barkat Nagar
Dr. Indra Kumar-Sneh Jain, President
Nawal-Sunita Jain, Secretary
Mukesh-Kalpana Shah, Treasurer
Digambar Jain Social Group Samyak, Jaipur
Doctor's team for consultation:
Dr. Manoj Yadav, Ophthalmologist
Manu Eye Hospital, Barkat Nagar
Dr. Rakesh Jain, Dentist
Krishna Dental Hospital
Main Tonk Road Sanganer Thana
Dr. Rahul Singhal, Director Cardiology
Dr. Sanskriti Tiwari General Physician
Dr. Piyush Pushp, Fortis Hospital

भारतीय संस्कृति के आद्य प्रणेता: प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव

भारतीय संस्कृति में जैन धर्म एक अनादि-निधन परंपरा है। इस परंपरा की वर्तमान चौबीसी में प्रथम तीर्थंकर के रूप में भगवान ऋषभदेव (आदिनाथ) का अवतरण हुआ। जैन पुराणों के अनुसार, 14 कुलकरों की श्रृंखला में अंतिम कुलकर महाराजा नाभिराय और माता मरुदेवी के आंगन में शाश्वत जन्मभूमि अयोध्या में भगवान का जन्म इक्ष्वाकुवंशी क्षत्रिय परिवार में हुआ। उन्हें आदिनाथ, वृषभदेव और पुरुदेव जैसे नामों से भी श्रद्धापूर्वक स्मरण किया जाता है।

प्राचीनता और सर्वमान्यता

ऋग्वेद जैसे विश्व के प्राचीनतम ग्रंथों में भगवान ऋषभदेव का उल्लेख मिलता है, जो जैन धर्म की प्राचीनता और भगवान आदिनाथ की सर्वमान्यता को सिद्ध करता है। भगवान का विवाह नन्दा और सुनन्दा से हुआ, जिनसे उन्हें भरत और बाहुबली सहित 101 पुत्र और ब्राह्मी व सुंदरी नामक दो पुत्रियां प्राप्त हुईं। ज्येष्ठ पुत्र भरत के नाम पर ही इस देश का नाम 'भारत' पड़ा।

छह विद्याओं (असि-मसि-कृषि) का प्रवर्तन

युग के प्रारंभ में जब कल्पवृक्षों का प्रभाव समाप्त होने लगा और प्रजा के सम्मुख उदर-पूर्ति का संकट खड़ा हुआ, तब भगवान ऋषभदेव ने मानवता को जीवित रहने के लिए छह अनिवार्य विद्याओं का उपदेश दिया:

असि (शस्त्र विद्या): राष्ट्र की रक्षा और राजधर्म के पालन हेतु शस्त्र संचालन और युद्ध नीति सिखाई।

मसि (लेखन कला): अपनी पुत्री ब्राह्मी को लिपि विद्या (ब्राह्मी लिपि) और सुंदरी को अंक विद्या (गणित) का ज्ञान देकर ज्ञान के द्वार खोले।

कृषि (खेती): प्रजा को शाकाहार का मार्ग दिखाते हुए अन्न उपजाने और इक्षुदण्ड (गन्ना) की खेती की विधि बताई।

विद्या (ज्ञान): शिल्प और कलाओं के साथ-साथ बौद्धिक विकास का मार्ग प्रशस्त किया।

वाणिज्य (व्यापार): उत्पादों के क्रय-विक्रय और व्यापारिक कौशल की शिक्षा दी।

शिल्प (निर्माण): आवास, मंदिर और कार्यालयों के निर्माण की कला सिखाई।

अहिंसा और वैराग्य का पथ

सांसारिक व्यवस्थाएं स्थापित करने के पश्चात, भगवान ने आत्म-कल्याण हेतु दिगंबर दीक्षा धारण की। घोर तपस्या के माध्यम से उन्होंने केवलज्ञान प्राप्त किया और इस युग के प्रथम मोक्षगामी बने। उनके अहिंसा, संयम और तप के सिद्धांत आज भी विश्व शांति का आधार हैं।

आधुनिक युग में गौरव की पुनर्स्थापना

भगवान ऋषभदेव के सिद्धांतों को जन-जन तक पहुँचाने में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, आचार्य श्री ज्ञानसागर जी (सरावकोद्धारक), आचार्य श्री सन्मति सागर जी और गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी जैसी महान विभूतियों का अविस्मरणीय योगदान है।

कुंडलपुर: आचार्य विद्यासागर जी की प्रेरणा से 'बड़े बाबा' का भव्य मंदिर निर्मित हुआ।

मांगीतुंगी: ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से 108 फीट ऊँची विशाल प्रतिमा (स्टैच्यू ऑफ अहिंसा) स्थापित हुई, जो आज विश्व का आकर्षण केंद्र है।

राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन की मांग

इस वर्ष 12 मार्च (चैत्र वदी नवमी) को भगवान ऋषभदेव का जन्म कल्याणक महोत्सव संपूर्ण देश-विदेश में मनाया जाएगा। अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने भारत सरकार और विभिन्न राज्य सरकारों से विनम्र निवेदन किया है कि भारतीय संस्कृति के आद्य प्रणेता के सम्मान में 12 मार्च को सार्वजनिक अवकाश घोषित किया जाए और इस दिवस को राष्ट्रीय स्तर पर गौरव के साथ मनाया जाए। भगवान ऋषभदेव की शिक्षाओं को जीवन में उतारना ही उनके प्रति सच्ची भक्ति होगी।

लेखक: उदयभान जैन (जयपुर)
राष्ट्रीय महामंत्री: अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद् संपर्क: 94143-06696

ईदगाह कॉलोनी में आदिनाथ महामंडल विधान का भव्य आयोजन, भक्ति में डूबे श्रद्धालु

आगरा. शाबाश इंडिया। नॉर्थ ईदगाह कॉलोनी स्थित श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में निर्यापक मुनिश्री विलोकसागर जी महाराज एवं मुनिश्री विबोधसागर जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में भगवान आदिनाथ जन्म कल्याणक महोत्सव के दूसरे दिन 'आदिनाथ महामंडल विधान' का भव्य आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातःकाल भगवान के अभिषेक और शांतिधारा से हुआ। इसके पश्चात बाल ब्रह्मचारी नितिन भैया के कुशल निर्देशन में निर्मल कुमार मोठया एवं हीरालाल-बीना बैनाड़ा परिवार द्वारा ध्वजारोहण की मांगलिक क्रिया संपन्न की गई। श्रद्धालुओं ने विधि-विधान से अर्घ्य समर्पित कर भगवान की आराधना की और मुनिश्री को शास्त्र भेंट किए। मुनिश्री विलोकसागर जी ने अपने मंगल प्रवचन में कहा कि तीर्थंकरों के कल्याणक आत्मशुद्धि और धर्ममार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। उन्होंने भक्तों से जीवन को संयम और धर्ममय बनाने का आह्वान किया। इस अवसर पर अशोक जैन, अमित जैन बॉबी, दिनेश जैन, राजेश जैन बल्ले, अजय जैन सहित सकल जैन समाज के सैकड़ों श्रद्धालु उपस्थित रहे। पूरा मंदिर परिसर दिनभर जयकारों और भक्तिमय वातावरण से सराबोर रहा। **रिपोर्ट: शुभम जैन**

अयोध्या के प्रथम राजा: तीर्थंकर ऋषभदेव और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

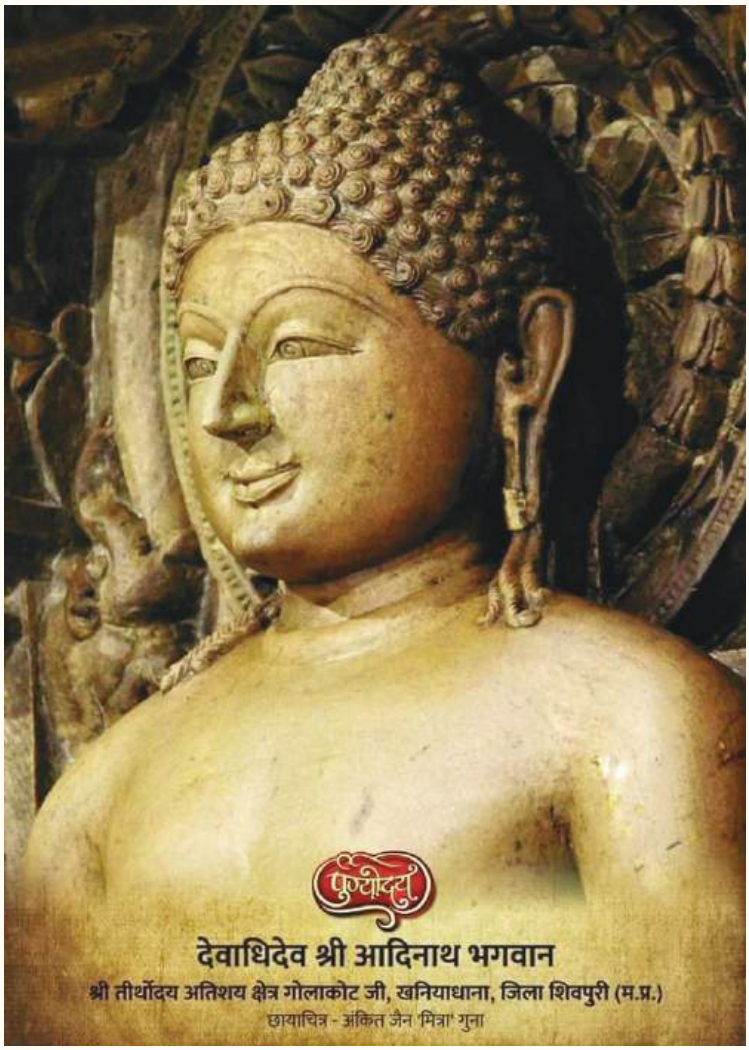

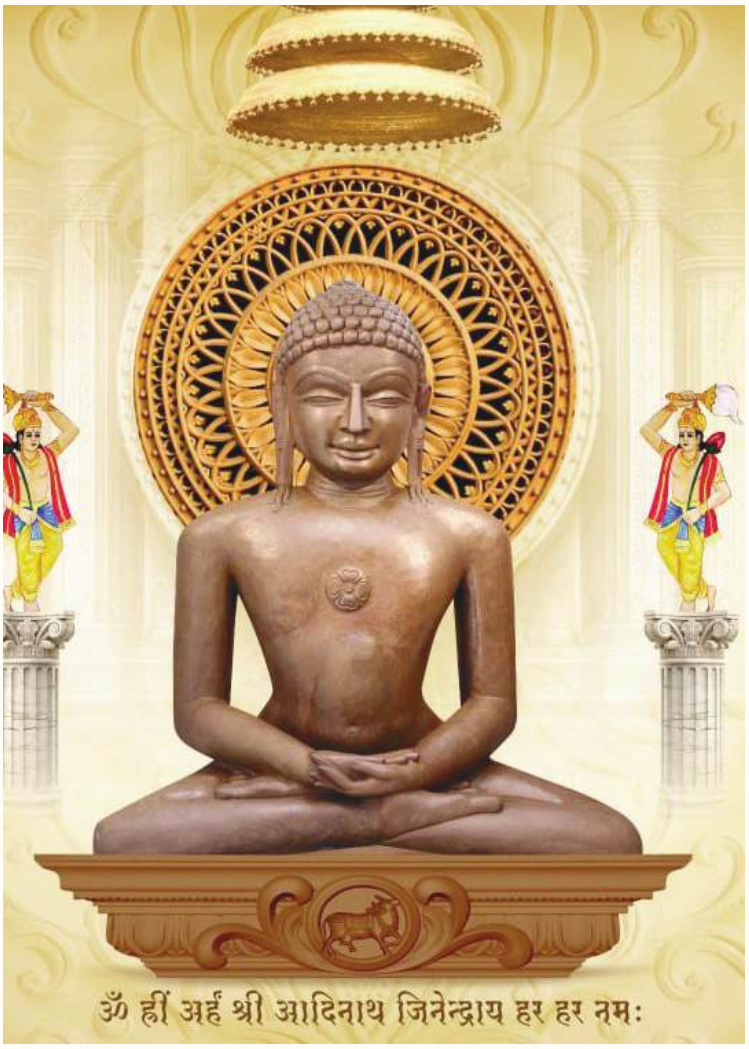

लेखकः डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

भारतीय सभ्यता की सांस्कृतिक चेतना अत्यंत प्राचीन और बहुआयामी है। यहाँ की आध्यात्मिक परंपराएँ केवल आस्था का विषय नहीं, बल्कि इतिहास, संस्कृति और दर्शन का महत्वपूर्ण आधार रही हैं। भारत की प्राचीन धार्मिक परंपराओं में जैन धर्म का स्थान अत्यंत गौरवपूर्ण है। जैन आगमों और प्राचीन ग्रंथों में वर्णित अनेक ऐतिहासिक तथ्य आधुनिक विद्वानों के लिए भी शोध का विषय रहे हैं। इसी संदर्भ में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा दिया गया वह उल्लेखनीय वक्तव्य विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करता है, जिसमें उन्होंने कहा कि ₹अयोध्या के प्रथम राजा जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव थे।₹ यह कथन केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं है, बल्कि भारतीय प्राचीन ग्रंथों में वर्णित ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य की भी पुष्टि करता है।

जैन परंपरा में अयोध्या का गौरव

जैन धर्मग्रंथों के अनुसार अयोध्या (साकेत या विनीतानगर) एक अत्यंत पवित्र और ऐतिहासिक नगर रहा है। आदिपुराण, पद्मपुराण और महापुराण जैसे ग्रंथों में स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि भगवान ऋषभदेव का जन्म अयोध्या में महाराजा नाभिराय और माता मरुदेवी के यहाँ हुआ था। यही कारण है कि अयोध्या जैन धर्मावलंबियों के लिए पंचकल्याणक की पावन भूमि के रूप में प्रतिष्ठित है।

मानव सभ्यता के आद्य प्रवर्तक

भगवान ऋषभदेव को जैन परंपरा में केवल एक आध्यात्मिक गुरु ही नहीं, बल्कि 'मानव सभ्यता के आद्य प्रवर्तक' के रूप में स्वीकार किया गया है। उन्होंने ही मानव समाज को कृषि (खेती), लिपि (लेखन), गणना, व्यापार, शिल्प, कला और सामाजिक संगठन की विधियाँ सिखाईं। इस दृष्टि से भगवान ऋषभदेव केवल एक धार्मिक व्यक्तित्व नहीं, बल्कि मानव संस्कृति के महान निर्माता भी हैं।

परंपरा का सम्मान: मुख्यमंत्री का वक्तव्य

योगी आदित्यनाथ द्वारा भगवान ऋषभदेव को अयोध्या का प्रथम राजा स्वीकार करना जैन परंपरा के प्रति सम्मान और ऐतिहासिक तथ्यों की स्वीकार्यता का प्रतीक है। भारत की बहुसांस्कृतिक विरासत में यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि विभिन्न धार्मिक परंपराओं के ऐतिहासिक योगदान को समान आदर मिले। मुख्यमंत्री का यह वक्तव्य उसी समन्वित दृष्टि का परिचायक है।

अयोध्या: बहुधार्मिक विरासत का प्रतीक

अयोध्या को प्रायः रामायण परंपरा से जोड़कर देखा जाता है, परंतु यह नगर जैन धर्म के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण है। जैन परंपरा के अनुसार यहाँ पाँच तीर्थंकरों—ऋषभदेव, अजितनाथ, अभिनंदननाथ, सुमतिनाथ और अनंतनाथ—का जन्म हुआ। यह नगर भारतीय संस्कृति की उस साझी विरासत का अद्भुत उदाहरण है, जहाँ विभिन्न धार्मिक धाराएँ समान रूप से विकसित हुईं।

इतिहास और शोध का समन्वय

जैन ग्रंथों के आलोक में यह स्पष्ट होता है कि भगवान ऋषभदेव को अयोध्या का प्रथम राजा कहने का अर्थ यह है कि उन्होंने पहली बार संगठित समाज और राजव्यवस्था की स्थापना की थी। इसी कारण जैन साहित्य में उन्हें 'आदिराज', 'आदिपुरुष' और 'मानव सभ्यता के प्रथम प्रवर्तक' के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। भगवान ऋषभदेव का व्यक्तित्व भारतीय संस्कृति का एक उज्ज्वल अध्याय है। उनका जीवन मानवता को संदेश देता है कि भौतिक

व्यवस्था और आध्यात्मिक साधना का संतुलन ही जीवन का वास्तविक मार्ग है। जब समकालीन नेतृत्व इस ऐतिहासिक परंपरा का उल्लेख करता है, तो यह न केवल जैन समाज के लिए गौरव का विषय है, बल्कि भारतीय संस्कृति की समृद्ध परंपरा का सशक्त प्रमाण भी है।

दूसरों को जगाने वाले का हाल 'मुर्गे' जैसा होता है, खुद को समय देना ही असली प्रगतिः अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागरजी

प्रतापगढ़. शाबाश इंडिया

अहिंसा संस्कार पदयात्रा के माध्यम से जन-जन में मानवीय मूल्यों का संचार कर रहे अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय पियूष सागरजी महाराज इन दिनों राजस्थान की पावन धरा पर पदविहार कर रहे हैं। औरंगाबाद से शुरू हुई यह यात्रा दीक्षा भूमि परतापुर (बांसवाड़ा) की ओर अग्रसर है। इसी श्रृंखला में गुरु भक्तों को संबोधित करते हुए आचार्य श्री ने आत्म-चिंतन पर गहरा प्रकाश डाला।

दूसरों को जगाने की कीमत

प्रवचन की शुरूआत एक मार्मिक उदाहरण से करते हुए आचार्य श्री ने कहा, जब मुर्गे से पूछा गया कि लोग तुम्हें शांति से जीने क्यों नहीं देते और काट कर खा जाते हैं? तब मुर्गे ने उत्तर दिया– जो दूसरों को जगाता है, दुनिया उसका यही हाल करती है। उन्होंने संकेत दिया कि जागृति का मार्ग कठिन है, लेकिन स्वयं को जगाना अनिवार्य है।

खुद का नंबर हमेशा 'बिजी' क्यों?

आचार्य श्री ने आधुनिक जीवनशैली पर कटाक्ष करते हुए कहा कि जिस मोबाइल से हम पूरी दुनिया से बात करते हैं, यदि उसी से खुद का नंबर डायल करें तो वह 'बिजी' (व्यस्त) बताता है। हम दूसरों से घंटों बात करते हैं, लेकिन कभी खुद से बात नहीं करते। भाग-दौड़ भरी जिंदगी में हम दूसरों को खुश करने के फेर में स्वयं को नजरअंदाज कर रहे हैं। उन्होंने आह्वान किया कि 24 घंटों में से 23 घंटे परिवार और व्यापार को दें, लेकिन एक घंटा 'खुद और खुदा' (स्वयं और ईश्वर) के लिए अवश्य निकालें।

'टाइम मी': आत्म-साक्षात्कार का मंत्र

आचार्य श्री ने आत्म-संवाद के लिए कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न सुझाएः
आज मैं कैसा महसूस कर रहा हूँ?
किस बात से मुझे खुशी मिली और किस डर ने मुझे सताया?
उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति अपनी भावनाओं को समझ लेता है, वह दूसरों को भी बेहतर समझ पाता है। जब हम स्वयं के प्रति ईमानदार होते हैं, तो निर्णय लेने की क्षमता मजबूत होती है और व्यक्तित्व में ठहराव आता है। अपनी कमजोरी को स्वीकार करना शर्म की बात नहीं, बल्कि सुधार का पहला रास्ता है।

पदयात्रा का अगला पड़ाव

अहिंसा संस्कार पदयात्रा प्रतापगढ़ से पारसोला, मुंगाना, नरवाली, घाटोल होते हुए अद्वेश्वर पार्श्वनाथ (परतापुर, बांसवाड़ा) की ओर बढ़ेगी। गुरुदेव ससंघ का 13 मार्च की सुबह तक प्रतापगढ़ (राजस्थान) में मंगल प्रवास रहेगा।

रिपोर्टः नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल (औरंगाबाद)

जोधपुर में वंदे भारत मेंटेनेंस डिपो विस्तार को मंजूरी

जोधपुर. कासं। जोधपुर रेलवे मंडल को बड़ी सौगात मिली है। भगत की कोठी रेलवे स्टेशन क्षेत्र में बन रहे वंदे भारत स्लीपर कोच मेंटेनेंस डिपो के विस्तार प्रोजेक्ट को मंजूरी मिल गई है। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने 195 करोड़ रुपये की इस महत्वपूर्ण परियोजना को स्वीकृति दी है। इस मंजूरी के बाद जोधपुर में अत्याधुनिक बहुद्देश्यीय वर्कशॉप और विश्वस्तरीय ट्रेनिंग सेंटर की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हो गया है। यहां देशभर के रेलवे इंजीनियरों और तकनीकी कर्मचारियों को हाई-स्पीड ट्रेनों के रखरखाव और संचालन से जुड़ी विशेष प्रशिक्षण सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। जोधपुर रेल मंडल के डीआरएम अनुराग त्रिपाठी ने बताया कि प्रोजेक्ट के तहत मेंटेनेंस डिपो के विस्तार के साथ एक आधुनिक आवासीय प्रशिक्षण केंद्र भी स्थापित किया जाएगा। इस केंद्र में वंदे भारत सहित सभी हाई-स्पीड ट्रेनों के रखरखाव से जुड़े तकनीकी स्टाफ को अत्याधुनिक मशीनरी के संचालन और अनुरक्षण का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

मौलाना फजलुर्रहीम फाउंडेशन की अनूठी पहल

जयपुर में 1500 से अधिक जरूरतमंदों को इफ्तार और राशन किट वितरित

जयपुर. शाबाश इंडिया। पवित्र रमजान माह के पावन अवसर पर मौलाना फजलुर्रहीम फाउंडेशन अपने सामाजिक सरोकारों को निभाते हुए राजधानी के विभिन्न क्षेत्रों में जरूरतमंदों की सहायता के लिए आगे आया है। संस्था की ओर से शहर के कई इलाकों में राशन एवं रोजा इफ्तार किट का व्यापक स्तर पर वितरण किया गया।

इन क्षेत्रों में पहुंचायी सहायता

फाउंडेशन ने शहर के भट्टा बस्ती, चांदपोल बाजार, नाई की थड़ी, खो नागोरियान, पाड़ा मंडी ईदगाह, ट्रांसपोर्ट नगर कच्ची बस्ती, घाट गेट बाजार, खजाने वालों का रास्ता तथा ईदगाह पंचरंग पट्टी क्षेत्रों में सक्रियता दिखाते हुए 550 इफ्तार बॉक्स जरूरतमंद रोजेदारों तक पहुँचाए। संस्था की फाउंडर चेयरपर्सन डॉ. समरा सुल्ताना ने बताया कि फाउंडेशन का मुख्य उद्देश्य समाज में सेवा, सहयोग और मानवता की भावना को सुदृढ़ करना है। इसी कड़ी में एमडी रोड पर एक विशेष इफ्तार वितरण ड्राइव का आयोजन किया गया, जहाँ वॉलंटियर्स के सहयोग से एक हजार से अधिक इफ्तार किट वितरित किए गए।

राशन किट वितरण अभियान भी जारी

डॉ. समरा सुल्ताना के अनुसार, इफ्तार के साथ-साथ शहर के विभिन्न क्षेत्रों में 'राशन किट वितरण अभियान' भी चलाया जा रहा है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि अभावग्रस्त परिवारों के पास पर्याप्त खाद्य सामग्री उपलब्ध रहे, ताकि वे पूरे आत्म-सम्मान के साथ रमजान के रोजे रख सकें। उन्होंने संकल्प दोहराया कि फाउंडेशन भविष्य में भी इसी प्रकार के सामाजिक और जनहित के कार्यों को निरंतर जारी रखेगा।